❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

सभी देशवासियों को
अधर्म पर धर्म, असत्य पर सत्य, बुराई पर अच्छाई, अज्ञान पर ज्ञान, पाप पर पुण्य, अत्याचार पर सदाचार की विजय के प्रतीक पर्व विजयादशमी (दशहरा) की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 43, अंक 47 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 19 अक्तूबर, 2020 से रविवार 25 अक्तूबर, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सम्पादकीय

वेबसीरीज, मूवी और विज्ञापन के नाम पर हिन्दू देवी-देवताओं को बार-बार बनाया जा रहा है निशाना

तनिष्क से लेकर लक्ष्मी बम : अखिर कौन है निशाना?

आपको नहीं लगता वेबसीरीज, मूवी और विज्ञापन के नाम पर बार-बार हिन्दू देवी-देवताओं निशाना बनाया जा रहा है? क्या ऐसे विज्ञापन दूसरे मत-पंथों पर बन सकते हैं? क्या मोहर्रम पर सड़कों पर खुद को प्रताड़ित करते बच्चों को बचाने के लिए रेड लेबल चाय कट्टरपंथी मुस्लिमों का दिमाग खोल सकती है? क्या सड़क पर कटते जानवरों को देखकर डरे किसी हिन्दू बच्चे को कोई मुस्लिम बच्ची बचाकर मंदिर तक छोड़कर आएगी? क्या होली के रंगों को दाग बताने वाले, खून के धब्बों को दाग बताने की हिम्मत जुटा पाएंगे? सुधार की तलवार और सामाजिक सद्भावना, सब एकतरफा ही क्यों हैं?

9 नवम्बर को रिलीज होने वाली फिल्म लक्ष्मी बम की है, जिसमें अक्षय कुमार मुख्य किरदार में है। लेकिन उनका नाम आसिफ है मतलब बालीवुड का वही तड़का जिसका अब पर्दाफाश हो गया, चाहे विज्ञापन हो, सीरियल या मूवी लोग अब पूछने तो लगे हैं, क्या बिना हिन्दू विरोध और लव जिहाद की अफीम डाले फिल्म नहीं बन सकती है? क्योंकि हिन्दू आस्था से जुड़े प्रतीक केदारनाथ में भी लव जिहाद और माता लक्ष्मी के नाम के साथ भी लव जिहाद। क्या किसी फिल्म का नाम सलमा बम या फातिमा बम हो सकता है?

हाल ही में तनिष्क के नए विज्ञापन में एक हिंदू महिला को दिखाया गया है, जिसकी मुस्लिम परिवार में शादी हुई है। वीडियो में इस महिला की गोदभराई यानि बेबी शावर का फंक्शन दिखाया गया है। प्रेग्नेंट महिला अपनी सास से पूछती है, माँ ये रस्म तो आपके घर में होती भी नहीं है? इस पर उसकी सास जवाब देती है, पर बिटिया को खुश रखने की रस्म तो हर घर में होती है न?

असल में 10 बीस सेकण्ड में कोई सन्देश देते हुए अपने माल को बेचना कोई आसान काम नहीं है, और अगर माल के साथ एजेंडा भी बेचना हो तो क्या कहने लेकिन टीवी देखते समय इसे समझने के लिए संवेदनशीलता चाहिए। वैसे जब बात हिन्दू आस्था की हो तो ज्यादातर कंपनियों से संवदेनशीलता की आशा करना बेमानी मालूम देता है। बहुराष्ट्रीय कंपनी हिन्दुस्तान यूनीलीवर ने तो जैसे अपने कमर्शियल विज्ञापन के माध्यम से हिन्दू विरोधी एजेंडा ही अपना लिया है। इस ब्रिटिश-डच कंपनी के उत्पादों के कमर्शियल विज्ञापनों में एक के बाद एक हिन्दुओं की आस्था को चोट पहुंचाई जा रही है। पिछले दिनों डिटर्जेंट पाउडर सर्फ एक्सल के विज्ञापन को सबने देखा होगा, इस विज्ञापन में दिखाया गया था कि एक मुस्लिम बच्चा इसलिए मस्जिद नमाज पढ़ने नहीं जा पाता, क्योंकि मोहल्ले में होली खेली जा रही थी।

.....अगर सदभावना सन्देश ही देना था तो ऐसे दिया जा सकता था कि मुस्लिम बच्चा भी होली खेलने लगता है उसका अब्बू उसे रंगों में रंगा हुआ देखकर पूछता आज मस्जिद नहीं गया बच्चा कहता नहीं आज होली है इस देश का त्यौहार है तो हम सदभावना सन्देश कह सकते थे। क्योंकि अगर होली के रंग नमाज में आड़े आ रहे हैं तो क्या कल ईद की सैवइयों या क्रिसमश के केक के खिलाफ भी ऐसा ही वैमनस्य फैलाया जा सकता है? वहीं, एक दूसरी लघु फिल्म 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम' में दिखाया गया है कि जब एक हिन्दू बच्चा मंदिर में पुजारी को भोजन और दक्षिणा देने निकलता है और मस्जिद पहुंच जाता है। यह समझाकर कि 'ईश्वर-अल्लाह एक हैं, मंदिर-मस्जिद एक हैं', अपना मौलवी को देता है और एक जरूरतमंद को दक्षिणा देकर वापस आ जाता है। हैरानी की बात है कि दोनों ही कहानियां सांप्रदायिक सद्भाव की हैं, लेकिन मुस्लिम बच्चे को मस्जिद जाते हुए होली के रंगों से भी परहेज है, पर हिन्दू बच्चा मंदिर की जगह मस्जिद पहुंच जाए तो गुरेज नहीं। क्या रंगों से बचते बच्चों को यह बात नहीं पता कि 'ईश्वर-अल्लाह एक' हैं? यह सीख क्या सिर्फ हिन्दुओं के लिए हैं?.....

- शेष पृष्ठ 2 पर

आर्यसमाज लेखूनगर (त्रिनगर), दिल्ली के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन सम्पन्न

आर्यसमाजों के माध्यम से सेवा कार्यों को बढ़ावा दें - पद्मभूषण महाशय धर्मपाल

रविवार 27 सितम्बर, 2020 को दिल्ली स्थित आर्य समाज लेखूनगर (त्रिनगर) के नवनिर्मित भवन एवं महाशय धर्मपाल आर्य यज्ञशाला का भव्य उद्घाटन एमडीएच समूह के चेयरमैन पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर महाशय जी ने स्वयं यज्ञ में आहुतियां प्रदान की और सारे विश्व के कल्याण की कामना करते हुए आर्य समाज की उन्नति प्रगति के लिए भी ईश्वर से प्रार्थना की। उन्होंने अपने यज्ञ संदेश में कहा कि सब सुखी हों, सब निरोग हों और सब मानव सेवा के कार्यों को आगे बढ़ाएं मैं सभी को अपनी शुभकामनाएं और आशीर्वाद देता हूं।

कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष प्रसिद्ध समाजसेवी सुरेन्द्र कोछड़ ने महाशय जी एवं अन्य सभी माननीय अतिथियों का सम्मान किया। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य आनन्द जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। भजनोपदेशक अंकित आचार्य के मधुर भजनों ने आर्यजनों का मन मोह लिया।

विशिष्ट अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य जी ने आर्यजनों का उत्साहवर्धन एवं भवन निर्माण की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आर्य समाज सदैव राष्ट्र निर्माण एवं मानव सेवा के कार्यों को आगे बढ़ा रहा है, आर्य समाज त्रिनगर दिल्ली की एक प्राचीन आर्य समाज है जिसका अपना एक प्रेरक इतिहास में पूर्व काल में भी यहां से आर्य

सबको सुखी व निरोग रहने का दिया आशीर्वाद

- शेष पृष्ठ 2 पर

नवनिर्मित यज्ञशाला में यज्ञ कतरे महाशय धर्मपाल जी। आर्यजनों को सम्बोधित करते सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं महाशय जी को सम्मानित करते आर्यसमाज के अधिकारीगण।

वेद-स्वाध्याय

शत्रु का शत्रुत्व समाप्त

आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम्।
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन्त्सुतुका नाहुषाणि।।-ऋक्. 6/22/10
ऋषिः **भरद्वाजो बार्हस्पत्यः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **पङ्क्ति।।**

शब्दार्थ - इन्द्र = हे इन्द्र! **शत्रुतूर्याय** = शत्रुओं के विनाश के लिए **नः** = हमें वह **बृहतीम्** = महान् **अमृध्राम्** = हिंसारहित, अहिंसिका **संयतम्** = संयमवाली **स्वस्तिम्** = स्वस्थता, निर्विकारता की अवस्था, कल्याणमयता को **आ** = [भर] सब ओर से प्राप्त कराओ, **यया** = जिस [स्वस्ति] द्वारा तुम **दासानि वृत्रा** = दास-शत्रुओं को **आर्याणि** = आर्य **करः** = कर देते हो, बना देते हो और **वज्रिन्** = हे वज्रवाले! **नाहुषाणि [वृत्रा]** = मनुष्य-शत्रुओं को **सुतुका** = उत्तम गमन व वृद्धिवाले या सुपुत्र बना देते हो।

विनय - हे इन्द्र! तुम्हीं पूरी तरह शत्रु का विनाश करनेवाले हो। तुम शत्रु का इतनी अच्छी तरह विनाश करते हो कि उसका सब शत्रुत्व, सब बुराई विनष्ट हो जाती है, किन्तु उस मनुष्य की अच्छाई जरा भी नष्ट नहीं होने पाती, बल्कि वह मनुष्य अधिक श्रेष्ठ बन जाता है। तुम दास-शत्रुओं को आर्य बनाकर उनका शत्रुपना नष्ट कर देते हो और मानुष-शत्रुओं को उत्तम आचरणवाले मनुष्य बनाकर उनका शत्रुत्व नष्ट कर देते हो। तुम अपनी जिस स्वस्ति से, जिस स्वस्थता से, जिस निर्विकारता से, जिस कल्याणमय अवस्था से ऐसा करते हो वह हमें भी प्रदान करो। हम अपने शत्रुओं का सच्चे अर्थों में विनाश कर सकें, इसके लिए वह अपनी स्वस्ति, वह अपनी निर्विकारता हमें भी प्राप्त कराओ। यह ठीक है कि हममें वह संयम, वह महत्ता, वह अहिंसा नहीं है जिसके बिना तुम्हारी यह स्वस्ति की शक्ति नहीं प्राप्त हो सकती, परन्तु ये गुण हमें अन्य कौन प्रदान करेगा? हे इन्द्र! तुम्हीं वह महान् अहिंसारूपिणी संयमवाली स्वस्ति-शक्ति हममें भर दो जिसके प्रयोग से मनुष्यत्व से गिरे हुए, उपक्षय करनेवाले, दास भी आर्य-मनुष्य बन जाते हैं और मनुष्य-'वृत्र' भी उत्तम गमन व आचरण वाले, सुन्दर वृद्धि करनेवाले या तेरे सुपुत्र बन जाते हैं; शत्रु नहीं रहते। हम भी, हे वज्रवाले! हे पाप का वर्जन करानेवाले! अब ऐसे ही ठीक प्रकार से शत्रु का विनाश कर सकनेवाले होना चाहते हैं। उलटे तरीके से, असंयम और हिंसा के तरीके से शत्रुओं का विनाश करने का यत्न करते-करते हम तंग आ गये हैं, इसलिए हे इन्द्र! अब हमें तुम्हीं अपना वह संयम प्रदान करो, अपनी वह महत्ता प्रदान करो, अपनी वह अहिंसा-शक्ति प्रदान करो और उस स्वस्ति व निर्विकारता का प्रदान करो जिसके साधन से मनुष्य किसी की भी हिंसा न करता हुआ सबकी उन्नति ही साधता है और इस प्रकार इस संसार में पूरी तरह शत्रुरहित हो जाता है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

तनिष्क से लेकर लक्ष्मी बम : अखिर कौन है निशाना?

यह विज्ञापन जहां एक तरफ मुस्लिम बच्चे को मासूम, होली से 'डरा' हुआ दिखाता है। तो वहीं हिन्दुओं को गैर हिन्दुओं पर जबरदस्ती रंग डालते हुए दिखाया गया था। यह अजीब तरह का विमर्श है जिसमें होली के रंग इस्लाम, नमाज और मस्जिद के विरोधी दिखाए जा रहे हैं।

यह विज्ञापन न सिर्फ इस्लाम और होली को विरोधी बता रहा था बल्कि दूसरे के उत्सवों में शामिल न होने की कट्टरवादी सोच का भी समर्थन करता दिख रहा था। अगर सदभावना सन्देश ही देना था तो ऐसे दिया जा सकता था कि मुस्लिम बच्चा भी होली खेलने लगता है उसका अब्बू उसे रंगों में रंगा हुआ देखकर पूछता है आज मस्जिद नहीं गया, बच्चा कहता- नहीं, आज होली है। इस देश का त्यौहार है तो हम सदभावना सन्देश कह सकते थे। क्योंकि अगर होली के रंग नमाज में आड़े आ रहे हैं तो क्या कल ईद की सैवइयों या क्रिसमश के केक के खिलाफ भी ऐसा ही वैमनस्य फैलाया जा सकता है? वहीं, एक दूसरी लघु फिल्म 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम' में दिखाया गया है कि जब एक हिन्दू बच्चा मंदिर में पुजारी को भोजन और दक्षिणा देने निकलता है और मस्जिद पहुंच जाता है। यह समझकर कि 'ईश्वर-अल्लाह एक हैं, मंदिर-मस्जिद एक हैं', वह भोजन मौलवी को देता है और एक जरूरतमंद को दक्षिणा देकर वापस आ जाता है। हैरानी की बात है कि दोनों ही कहानियां सांप्रदायिक सद्भाव की हैं, लेकिन मुस्लिम बच्चे को मस्जिद जाते हुए होली के रंगों से भी परहेज है, पर हिन्दू बच्चा मंदिर की जगह मस्जिद पहुंच जाए तो गुरेज नहीं। क्या रंगों से बचते बच्चों को यह बात नहीं पता कि 'ईश्वर-अल्लाह एक' हैं? यह सीख क्या सिर्फ हिन्दुओं के लिए हैं?

यह सिर्फ कमर्शियल विज्ञापनों तक सीमित नहीं है, फिल्म हैदर में मार्तण्ड सूर्य मंदिर को 'शैतान की गुफा' दिखाया गया है? क्या किसी मस्जिद को इस तरह दिखाया जा सकता है? महिला समलैंगिक संबंधों पर बनी फिल्म फायर में दोनों प्रधान महिला चरित्रों के नाम सीता और राधा रखे गए। क्या ऐसे ही कभी फातिमा और मारिया नाम की दो महिला चरित्रों के बीच अंतरंग दृश्य फिल्माए जा सकते हैं?

विवाद सिर्फ फिल्मों और कमर्शियल विज्ञापनों से ही जुड़ा नहीं है। यह एक तरह की मानसिकता है जिसमें मुसलमान हमेशा दुखी, पीड़ित व उदारवादी है और हिन्दू हमेशा कट्टर, रूढ़िवादी, असंवेदन शील दिखाया जाता है। लगता है हमारा जन्म इस देश में इनका विरोध करने के लिए हुआ है। क्योंकि यह मानसिकता विज्ञापनों और फिल्मों, यहां तक कि इतिहास लेखकों, सामाजिक सुधार के कार्यक्रमों अखबारों के संपादकीय लेखों में भी सब जगह दिखायी देती है। हॉकी खिलाड़ी मीर रंजन नेगी के जीवन से प्रभावित फिल्म चक दे इंडिया में नायक का नाम कबीर खान कर दिया जाता है और फिल्म के माध्यम से यह बताया जाता है कि पाकिस्तान के हाथों एक मैच हारने पर एक मुस्लिम खिलाड़ी के साथ उसके पड़ोसी ऐसा अमानवीय व्यवहार करते हैं कि उसे घर छोड़कर जाना पड़ता है, जबकि असल जिंदगी में जिस मुसलमान खिलाड़ी पर मैच फिक्सिंग का आरोप लगा था वह मो. अजरुद्दीन घर छोड़ने की जगह लाखों के वोट पाकर लोकसभा पहुंच जाते हैं। लेकिन फिल्म मुसलमान 'विक्टिम मोड' को बढ़ावा देती है तो राष्ट्रीय पुरस्कार जीत जाती है। यही वह मानसिकता है जो साल दर साल, फिल्म दर फिल्म और विज्ञापनों के माध्यम से हममें रोपने की कोशिश की जाती है।

फिल्मों और विज्ञापनों के माध्यम से मुसलमानों को लगातार 'पीड़ित' व हिन्दुओं को 'शोषक' दिखाना एक तरह का चलन हो चला है। जिन्हें यह लगता है कि ऐसे तुष्टीकरण या पीड़ितवाद से वे मुसलमानों का भला कर रहे हैं तो उन्हें दोबारा सोचना चाहिए कि ऐसा करके वे मुसलमानों, हिन्दुओं और देश तीनों का नुकसान कर रहे हैं। हिन्दुओं के लिए ईद की सैवइयां खाना और क्रिस्मस पर केक खाना उदारता है तो मुस्लिमों के लिए भी होली के दाग अच्छे होने दीजिए। क्योंकि दूसरे मत को सम्मान देकर अगर दाग लगते हैं तो वे दाग अच्छे हैं। तनिष्क ज्वेलर्स को लव जिहाद की पीड़ित युवतियों की लाशें और प्रताड़ना देख लेनी चाहिए तब डायलाग डालना बिटिया को कैद रखने की रस्म तो मजहबी घर में होती है न?

- ***सम्पादक***

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

- ***संयोजक***

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज लेखूनगर (त्रिनगर)

समाज के अनेक कार्यकर्त्ता मानव सेवा के लिए समर्पित भाव से कार्य करते रहे हैं और आगे भी यह सिलसिला निरंतर जारी रहेगा। महाशय जी की आदर्श दिनचर्या पर ऊपर बोलते हुए उन्होंने कहा कि 97 वर्ष की अवस्था में जो व्यक्ति निरंतर प्रातःकालीन सैर और सुबह से लेकर शाम तक सारे कार्यों को विधिवत चलाते हैं। ऐसे महापुरुष से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए और सभी युवाओं को अपनी दिनचर्या को नियमित करना चाहिए। आर्य समाज द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में जो महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं, जिनमें महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान का वर्णन करते हुए विनय आर्य जी ने युवाओं के लिए इसे स्वर्णिम अवसर बताया।

विशेष आमंत्रित अतिथि के रूप में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान अरुण प्रकाश आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामंत्री सतीश आर्य, मंत्री योगेश आर्य इत्यादि महानुभाव कार्यक्रम में उपस्थित थे। त्रिनगर क्षेत्र की निगम पार्षद मंजू संजय शर्मा ने भी यज्ञ में अपनी आहुतियां प्रदान कीं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज लेखू नगर (त्रिनगर) के प्रधान रवि अजय हंस एवं कार्यक्रम का संचालन अजय कालरा ने किया। आर्य समाज त्रिनगर के सभी पदाधिकारियों का कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा। आर्य समाज के संरक्षक आत्म प्रकाश कालरा ने सभी माननीय अतिथियों एवं उपस्थित आर्यजनों का आभार व्यक्त किया।

- ***मन्त्री, आर्यसमाज***

भारत-नेपाल बार्डर पर मुस्लिम मुहिम की शातिराना हरकत

भारत-नेपाल सीमा पर कहां से उग रहे हैं मदरसे?

.....एक दशक तक नेपाल माओवाद से ग्रसित रहा और सड़कें रक्तरंजित रही। नेत्र बिक्रम चंद और माओवादी नेता पुष्प कमल दहल प्रचंड एक समय एक-दूसरे के सहयोगी हुआ करते थे। इन्हीं दोनों ने साल 1996 में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल माओवादी बनाई थी। इस पार्टी ने करीब 10 साल तक सरकार के खिलाफ सशस्त्र लड़ाई लड़ी। साल 2006 में पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' ने शांति प्रक्रिया में शामिल होने और राजनीति में आने का फैसला किया। सत्ता मिलते ही नेपाल में हथियार डाल दिए। और नेपाल को हिन्दू राष्ट्र से भारत वाली धर्मनिरपेक्षता में झोक दिया। ऐसा क्यों हुआ और नेपाल में इन लोगों को हथियार और पैसा कहाँ से मिल रहा था क्योंकि नेपाल एक लेंडलॉक देश है। .....

किसी घटना की व्याख्या करने वाला कोई सुझाव या अलग-अलग प्रतीत होने वाली बहुत सी घटनाओं के आपसी सम्बन्ध की व्याख्या करने वाला कोई तर्कपूर्ण सुझाव को परिकल्पना कहते है। हम सब मिलकर देश हित के बहुत सारे मुद्दे उठाते हैं, ठोस परिकल्पना करते हैं। उन्हें जोड़ते हैं, सुझाव देते और सुझाव लेते हैं ताकि भारत का भविष्य उज्जवल रहे।

एक दशक तक नेपाल माओवाद से ग्रसित रहा और सड़कें रक्तरंजित रही। नेत्र बिक्रम चंद और माओवादी नेता पुष्प कमल दहल प्रचंड एक समय एक-दूसरे के सहयोगी हुआ करते थे। इन्हीं दोनों ने साल 1996 में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल माओवादी बनाई थी। इस पार्टी ने करीब 10 साल तक सरकार के खिलाफ सशस्त्र लड़ाई लड़ी। साल 2006 में पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' ने शांति प्रक्रिया में शामिल होने और राजनीति में आने का फैसला किया। सत्ता मिलते ही नेपाल में हथियार डाल दिए। और नेपाल को हिन्दू राष्ट्र से भारत वाली धर्मनिरपेक्षता में झोक दिया। ऐसा क्यों हुआ और नेपाल में इन लोगों को हथियार और पैसा कहाँ से मिल रहा था क्योंकि नेपाल एक लेंडलॉक देश है।

इस सवाल का जवाब साल 2002 में जी न्यूज की एक खबर में दिया गया था कि भारत नेपाल सीमा पर बड़ी संख्या में खुल रहे मदरसे कहीं नेपाल की आग का कारण तो नहीं? परिकल्पना महज एक सवाल के साथ उड़ेली गयी थी। जबकि उसी दौरान नेपाल सरकार ने खुलकर माओवाद का कारण भारत की सीमा पर बन रहे मदरसे बताया था कि भारत की सीमा से सटे मदरसों से माओवादियों को हथियार और फंडिंग की जा रही है।

इससे कुछ समय पहले जनवरी 1997 में नेपाल के त्रिभुवन एयरपोर्ट से पाक की खुफिया एजेंसी आईएसआई एजेंट मिर्जा दिलशाद बेग 20 किलो आरडीएक्स के साथ पकड़ा गया था। जो नेपाल में पाकिस्तान के दूतावास का कर्मचारी बताया जाता रहा। थोडा और अखबारों का सहारा लें तो 3 जुलाई, 2000 में एक पत्रकार ने इंडिया टुडे में एक स्टोरी दी थी जिसे 12 साल बाद यानि 2012 में अपडेट किया गया। इसका शीर्षक था इंडो नेपाल बॉर्डर बी कम्स न्यू हॉटबेड ऑफ क्रिमनल एंड आई एस आई रिलेटेड एक्टिविटीज यानि भारत नेपाल सीमा आई एस आई गतिविधि का केंद्र बन गया। लेकिन सरकार की पता नहीं क्या मजबूरी थी और इस खबर पर कान दबाये बैठी रही। हाल ये हुआ कि 2006 तक उत्तर प्रदेश-बिहार से लगती भारत नेपाल सीमा पर सुरक्षा चौकियों से अधिक मदरसे बन गये, नतीजा यह हुआ कि माओवादियों की जीत पक्की हो गयी और नेपाल सरकार ने घुटने टेक दिए।

इसी दौरान यानि ठीक साल 2006 में सशस्त्र सीमा बल के महानिदेशक सीमा तिलक काक ने एक प्रेस कांफ्रेंस की उन्होंने कहा कि भारत-नेपाल सीमा के दोनों किनारों पर हाल के दिनों में मदरसों की तेजी से वृद्धि हुई है। लगभग 1900 मदरसे बनाये जा चुके है, जिनमें लगभग 1100 भारत में हैं और बाकी नेपाल में हैं और सुरक्षा एजेंसियां 50 या 60 संवेदनशील लोगों पर कड़ी नजर रखे हुए है।

हालात जस के तस चलते रहते हैं, सरकार खतरे से आँख बंदकर सो गयी कहो या वोट बैंक के लालच में मौन हो गयी हो! सुरक्षा एजेंसियां अपने स्तर पर काम तो करती रही सरकार को चेताती भी रही लेकिन सोते को जगाया जा सकता है जानबूझकर सोने वाले को नहीं। इसी कशमकश में दिन महीने और साल बीत जाते हैं।

लेकिन पिछले दिनों दिल्ली में सुरक्षा एजेंसियों के हाथ मुस्तकीम उर्फ अबू यूसुफ नाम का आतंकी लगा था, जिसने पूछताछ में बहुत ही अहम जानकारियां दी। मुस्तकीम की निशानदेही पर उत्तर प्रदेश के बलरामपुर में उसके घर से विस्फोटक पदार्थ, फिदायीन जैकेट्स भी मिली थी। इस दौरान आतंकी ने बताया था कि वह 2017 में नेपाल बॉर्डर में सप्तपुरी तब्लीगी जमात के जलसे में शामिल हुआ था। इस जानकारी के बाद उत्तर प्रदेश के महाराज गंज, बहराइच, बलरामपुर, श्रावस्ती और सिद्धार्थ नगर के जिलों के साथ साथ बिहार के रोहताश, परसा, कपिलवस्तु, सुनसारी बारा जिलों में सक्रिय मदरसों की जाँच पड़ताल शुरू की गई है। अकेले सिद्धार्थ नगर जिले में पिछले एक साल में 47 नए मदरसे खुले हैं, जबकि जिले में 452 मदरसे पहले से थे। सूचना के बाद योगी सरकार ने जांच के आदेश दिए और उत्तर प्रदेश की सीमा से सटे 257 मस्जिद-मदरसों में टेरर फंडिंग के शक में जाँच को आगे बढाया। पिछले महीने यह खबर आई कि कराची की प्रेस में छापे 2000 और 500 के जाली नोटों को दाऊद के गुर्गों के जरिए आईएसआई नेपाल के रास्ते भारत भेज रही है।

हालाँकि ये नई चीज नहीं थी क्योंकि 28 अगस्त 2009 को काठमांडू के त्रिभुवन अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर दोहा से आये पाकिस्तानी नागरिक अब्दुल गफ्फार की गिरफ्तारी भी जाली भारतीय रुपये के कारोबार की ही एक कड़ी थी। हालात खराब थे दोनों देशों की खुली सीमा और बड़ी संख्या में मदरसे होने कारण कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। लेकिन पिछले साल दिल्ली में पीलीभीत के कारोबारियों से 1.20 लाख के जाली नोट पकड़े जाने के बाद एनआईए, एटीएस समेत देश की सभी सुरक्षा एजेंसियों ने इसकी जांच पड़ताल शुरू कर दी। नोटबंदी के बाद 2000 और 500 के जाली नोटों की सबसे पहले बड़ी खेप नवंबर 2019 में नेपाल के काठमांडू में पकड़ी गई। एक पूर्व मंत्री के बेटे और पाकिस्तानी एजेंट के पास सुरक्षा एजेंसियों ने करीब पोने आठ करोड़ के जाली नोट पकड़े।

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रेरक प्रसंग

मैं वैदिक धर्म का उपदेशक हूं

पश्चिमी पंजाब का एक परिवार बस में यात्रा कर रहा था। इस परिवार को अपने सगे-सम्बन्धियों के यहाँ शादी पर जाना था। इन्होंने मुलतान में बस बदली। बस बदलते हुए इनका एक ट्रंक अनजाने में बदल गया। किसी और यात्री का ट्रंक भी ठीक उन्हीं के जैसा था। आगे की बस द्वारा यह परिवार अपने सगे-सम्बन्धियों के घर पहुँचा। वहाँ जाकर ट्रंक खोला तो उसमें तो पुस्तकें व रजिस्टर, कापियाँ ही थीं।

जिस यात्री के हाथ इनका ट्रंक आया, वह भी मुलतान से थोड़ी दूरी पर कहीं गया। वहाँ जाकर इसने ट्रंक खोला तो इसमें आभूषण व विवाह-शादी के वस्त्र थे। इसे यह समझने में देर न लगी यह समान तो बस में यात्रा कर रहे किसी ऐसे परिवार का है जिसे विवाह में सम्मिलित होना है। सोचा वह परिवार कितना दु:खी होगा, तुरन्त लौटकर ट्रंकसहित मुल्तान आया। बस अड्डे पर बैठकर बड़े ध्यान से किसी व्याकुल, व्यथित की ओर दृष्टि डालता रहा।

उधर से वे लोग पुस्तकोंवाला ट्रंक लेकर रोते-धोते आ गये। उनको थोड़ा सन्तोष था कि पुस्तकों, रजिस्टरों पर ट्रंकवाले का नाम पता था, परन्तु साथ ही संशय बना हुआ था कि क्या पता वह भाई अपना ट्रंक न पाकर खाली हाथ ही रहा हो और अपने ट्रंक के लिए परेशान हो। इस परिवार को ट्रंक सहित रोते-चिल्लाते आते देखकर दूर बैठे दूसरे यात्री ने पुकारा और कहा कि दुखी होने की कोई आवश्यकता नहीं, यह लो तुम्हारा ट्रंक। अपने माल की पड़ताल कर लो।

अब इस परिवार की प्रसन्नता का कोई पारावार ही नहीं था। पुस्तकोंवाला ट्रंक लौटाते हुए अपना बहुमूल्य सामान लेकर उस यात्री को बहुत बड़ी राशि पुरस्कारस्वरूप भेंट करने लगे तो वह यात्री बहुत विनम्रता से गरजती हुई आवाज में बोला, ''यह क्या कर रहे हो?'' ''यह आपकी इमानदारी के लिए प्रसन्नतापूर्वक पुरस्कार दिया जाता है।'' उस परिवार के मुखिया ने कृतज्ञतापूर्वक कहा।

इस यात्री ने कहा ''ईमानदारी इसमें क्या है? यह तो मेरा कर्त्तव्य बनता था। मैं वैदिक धर्म का उपदेशक हूँ। ऋषि दयानन्द का शिष्य हूँ।''

उस भाई ने एक पैसा भी स्वीकार न किया। सारे क्षेत्र में दूर-दूर तक आर्यसमाज की वहा! वाह! होने लगी। सब ओर इस घटना की चर्चा थी। स्वामी वेदानन्दजी तीर्थ ने यह कहानी उन दिनों एक लेख में दी थी।

यह पुस्तकोंवाला भाई आर्यसमाज का एक पूजनीय विद्वान् पण्डित मनुदेव था। यही विद्वान् आगे चलकर पण्डित शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थमहारथी के नाम से विख्यात हुआ। ऐसे लोग मनुजता का मान होते हैं।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

कीर्तिशेष डॉ. विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी का प्रेरक स्मरण

डॉ. विनोदचन्द्र जी विद्यालंकार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के यशस्वी, विद्वान् स्नातक, वेद भाष्यकार स्वनामधन्य ऋषिकल्प डॉ. रामनाथ वेदालंकार के प्रिय पुत्र डॉ. विनोदचन्द्र जी विद्यालंकार अकस्मात् ही इस नश्वर शरीर का परित्याग कर कीर्ति शेष हो गये। स्वामी श्रद्धानन्द: एक विलक्षण व्यक्तित्व ग्रन्थ का निर्माण कर स्वयं को कुलपिता अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का सच्चा कुलपुत्र सिद्ध करने वाले डॉ. विद्यालंकार की श्रेष्ठ कृतियां हैं- 1. जयदेव : आचार्य एवं नाटककार के रूप में आलोचनात्मक अध्ययन, 2. स्नातक परिचायिका (गुरुकुल विश्वविद्यालय के 1976 तक के स्नातक/स्नातिकाओं का परिचय) 3. शतपथ के पथिक स्वामी समर्पणानन्द : एक बहुआयामी व्यक्तित्व (दो खण्डों में), 4. नि:श्रेयस् (आर्य वानप्रस्थ आश्रम की हीरक जयन्ती स्मारिका), 5. निहारिका, 6. भारतीय संस्कृति के पुरोधा : स्वामी श्रद्धानन्द। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में वैदिक एवं अन्य विषयों पर लेख प्रकाशित।

आपकी मौलिक एवं वैदिक चिन्तनधारा से अनुप्राणित कृतियों के लिये अनेक संस्थाओं ने आपका अभिनन्दन एवं सम्मान किया। इनमें प्रमुख हैं- 1. महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ वाराणसी द्वारा वर्ष 1997 में हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य निर्माण में योगदान के लिए, 2. आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) द्वारा जून 2003 में हीरक जयन्ती स्मारिका के सम्पादन/प्रकाशन में योगदान हेतु, 3. राजभाषा संघर्ष समिति दिल्ली द्वारा 31 जुलाई को दीर्षकालीन हिन्दी-सेवा के लिए श्री जगन्नाथ स्मृति राजभाषा सम्मान 2004-2005, 4. आर्य समाज ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली द्वारा पं0 सत्यदेव शर्मा विद्यालंकार स्मृति-सम्मान, 5. उत्तराखण्ड गौरव सम्मान (2009), 6. आर्यविभूषण सम्मान (राव हरिश्चन्द्र आर्य धर्मार्थ न्यास नागपुर द्वारा), 7. श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य साहित्य सम्मान, हिण्डौन सिटी (2015)।

अनेक शारीरिक रोगों से संघर्ष करते हुए भी आप निरन्तर सारस्वत-अनुष्ठान में संलग्न रहे। गुरुकुल के प्राचीन स्नातकों की देदीप्यमान परम्परा के प्रतिनिधि विद्वान् के प्रयाण से आर्य जगत में शोक की लहर व्याप्त हो गयी है।

डॉ. विनोदचन्द्र जी के निधन को डॉ. महेश विद्यालंकार दिल्ली ने आर्यसमाज की बहुत बड़ी क्षति बताया। डॉ. आनन्दकुमार पूर्व IPS ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए भावपूर्ण शब्दों में कहा कि वे मुझे सदैव लेखन की प्रेरणा प्रदान करते रहे। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. रूप किशोर शास्त्री ने डॉ. विद्यालंकार को सभा स्नातकों का अत्यन्त प्रिय एवं आदरणीय मित्र बताया। वेद विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेशचन्द्र शास्त्री ने उन्हें पाण्डित्य का अथाह सागर निरूपित करते हुए इसे अपनी व्यक्तिगत क्षति बताया।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. महावीर अग्रवाल ने

- डॉ. महावीर अग्रवाल

श्रद्धांजलि के अवसर पर अपने गुरुवर आचार्य रामनाथ वेदालंकार के गुणों एवं वैदुष्य का स्मरण करते हुए डॉ. विनोदचन्द्र जी को वैदिक परम्परा का उत्कृष्ट लेखक बताया। श्रद्धांजलि देने वालों में डॉ. जयदेव वेदालंकार, डॉ. सुरेन्द्र शर्मा, श्री अमृत मुनि, डॉ. मनुदेव बन्धु, डॉ. सत्यदेव निगमालंकार, डॉ. त्रिलोकचन्द्र जी, श्रीमती दीप्ति आदि ने भावपूर्ण संस्मरण प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

डॉ. विनोदचन्द्र जी के सुपुत्र श्री स्वस्ति अग्रवाल ने शोक के क्षणों में उपस्थित होकर धैर्य प्रदान करने वाले सभी विद्वानों और पारिवारिक जनों के प्रति धन्यवाद और आभार प्रकट किया।

बाल बोध

विद्यार्थी जीवन की आवश्यक बातें

विद्यार्थी के लिए सुख वर्जित है। उसे दोनों में से एक रास्ता चुनना होगा। विद्या या फिर सुख का त्याग करना ही होगा। इसके अतिरिक्त यह भी कहा गया है कि आलसी को विद्या, अज्ञानी को धन, निर्धन को मित्र, और जिसके मित्र नहीं हैं उसको सुख की उपलब्धि सर्वदा दुर्लभ है। अतएव कर्मठता ही विद्यार्थी का साधन होना चाहिए। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समय का सदैव सदुपयोग करें। क्योंकि समय अत्यधिक मूल्यवान है। 'Time is money' समय ही धन है। अत: समय का सदुपयोग करो 'Empty mind is a devil's workshop' अत: विद्यार्थी को कभी खाली नहीं बैठना चाहिए। कर्म को भी पूजा मानकर ही करना चाहिए। 'Work is workship' । उत्तम कर्म करने वाले ही संसार में महान बनते हैं और अमर हो जाया करते हैं। वे कभी नहीं मरते। 'They never die who die in good causes.'

आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। शास्त्रों में वर्णन है **"आलस्यं हि मनुष्याणाम् शरीरस्तु महान् रिपु:"।** आलसी व्यक्ति कभी भी कर्मठ नहीं होगा। वह सदैव ही कर्म से जी चुराएगा और अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सदैव उदासीन रहेगा। अत: विद्यार्थी को कभी भी आलसी नहीं होना चाहिए क्योंकि आलस्य ही विद्यार्थी के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है। विद्यार्थी को सुख-श्रृंगार और आलस्य को छोड़कर अपनी पाठ्यपुस्तकों का पूरे मनोयोग से निरन्तर अध्ययन करना चाहिए। विद्यार्थी को कभी सुख की अभिलाषा नहीं करनी चाहिए।

हमारे आचार्यों ने कितना सुन्दर कहा है-

सुखार्थिन: कुतो विद्या,
विद्यार्थिन: कुतो सुखम?
सुखार्थी वा त्जयेत् विद्याम्,
विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्।।
अलसस्य कुतो विद्या,
अविद्यस्य कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो मित्रम्,
अमित्रस्य कुतो सुखम्।।

तात्पर्य यही है कि विद्यार्थी के लिए सुख वर्जित है। उसे दोनों में से एक रास्ता चुनना होगा। विद्या या फिर सुख का त्याग करना ही होगा। इसके अतिरिक्त यह भी कहा गया है कि आलसी को विद्या, अज्ञानी को धन, निर्धन को मित्र, और जिसके मित्र नहीं हैं उसको सुख की उपलब्धि सर्वदा दुर्लभ है। अतएव कर्मठता ही विद्यार्थी का साधन होना चाहिए। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समय का सदैव सदुपयोग करें। क्योंकि समय अत्यधिक मूल्यवान है। 'Time is money' समय ही धन है। अत: समय का सदुपयोग करो 'Empty mind is a devil's workshop'

अत: विद्यार्थी को कभी खाली नहीं बैठना चाहिए। कर्म को भी पूजा मानकर ही करना चाहिए। 'Work is workship' उत्तम कर्म करने वाले ही संसार में महान बनते हैं और अमर हो जाया करते हैं। वे कभी नहीं मरते। 'They never die who die in good causes.'

गीता में भी भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को समझाते हुए कहा है-

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
नहि कल्याणकृत्कश्चिद् दुर्गतिं तात् गच्छति।।

हे पार्थ! जो व्यक्ति कल्याणकारी कार्यों में लगा रहता है, उसका न तो इस जीवन में विनाश होता है, न परलोक में, क्योंकि भले काम करने वाले की कभी दुर्दशा नहीं होती है। अत: समय को मूल्यवान समझते हुए प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना चाहिए।

Make use of every moment of life to get more and more knowledge.

विद्यार्थी जीवनचर्या में नियमों का पालन करना नितान्त आवश्यक है नियमों के अभाव में जीवन अस्त व्यस्त रहेगा।

प्रथम नियम : विद्यार्थी को प्रात: ब्रह्ममुहूर्त में उठना विशेष लाभदायक है।

जल्दी सोते जल्दी जागे, ,
तनिक नहीं दु:ख पावे।
बल बढ़ै, बुद्धि बढ़ै,
बहुत घणा धन उसके आवै।।

'Early to bed, early to rise, makes a man healthy, wealthy and wise.'

कहते हैं न प्रात: काल का पिछड़ा व्यक्ति सायं काल तक पिछड़ा ही रहता है अर्थात Well begun is half done. प्रात:काल उठकर माता-पिता, गुरु, वृद्धजनों और भाई-बहिनों को प्रणाम करें।

'प्रात:काल उठिके, रघुनाथा।
माता-पिता गुरु नावाहिं माथा"।।

रामायण में वर्णन आता है। चारों भाई प्रात:काल उठकर अपने माता-पिता और गुरु के चरण स्पर्श करते थे और परस्पर अभिवादन भी करते थे। महर्षि मनु महाराज लिखते हैं:-

अभिवादन शीलस्य नित्यंवृद्धोप सेविन। चत्वारितस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्।।

अर्थात् प्रात:काल उठकर जो व्यक्ति व्यायाम करता है वह बलवान, धन कमाने वाला, विद्वान और परमात्मा की भक्ति करने वाला सिद्ध योगी बनता है। परन्तु इन सबके साथ जो यश भी प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें प्रतिदिन माता-पिता गुरु के चरण छूकर तथा परस्पर हाथ जोड़कर श्रद्धा और प्रेमभाव से नमस्ते करना चाहिए। जिसके साथ माता-पिता-गुरु आदि का आशीर्वाद होता है, उसको दुनिया में कोई नहीं हरा सकता। सफलता अवश्य मिलती है। अत: प्रत्येक को प्रात: नमस्ते का नियम अपने जीवन में अपनाना चाहिए। क्योंकि बड़ों का, गुरु का आशीर्वाद जीवन में सदैव फलित होता है। जो हम सभी के सौभाग्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से विद्यार्थी काल में।

- शेष अगले अंक में

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी जे पी अवार्ड से सम्मानित

गत दिनों लोकनायक जयप्रकाश अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन विकास केंद्र द्वारा आयोजित जे पी जयंती के अवसर देश के विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक, सांस्कृतिक, पत्रकारिता, साहित्य, खेल, शिक्षा, पर्यावरण के क्षेत्र में उत्कृष्टता से कार्य करने वालों को जे पी अवार्ड से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अध्यात्म पथ के संपादक आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी ने समारोह को संबोधित किया। मंच पर श्री अनूप जलोटा जी (भजन सम्राट), श्री अर्जुन राम मेघवाल जी (भारत सरकार के भारी उद्योग एवं संसदीय कार्य मंत्री), श्री राम चन्द्र राही जी (चेयरमैन, गांधी स्मारक निधि राजघाट) एवं डॉ सच्चिदानंद जोशी जी (इंदिरा गांधी राष्ट्र कला केंद्र के सदस्य सचिव) थे।

आर्य समाज राधा पुरी दिल्ली का 65 वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज राधा पुरी दिल्ली का 65 वॉ वार्षिकोत्सव कार्यक्रम जूम ऐप पर कार्यक्रम 2-10-2020 को शाम 3 से 6 बजे तक सम्पन्न हुआ। यज्ञ पंडित सतेन्द्र कुमार जी ने करवाया तथा पंचमहायज्ञ के बारे में समझाया। आचार्य देव जी ने ईश्वर भक्ति, देश भक्ति, एवं ऋषि भक्ति के मधुर भजनों द्वारा सभी को आनंदित किया। बच्चों ने भी मंत्र, ईश्वर भक्ति,देश भक्ति गीत एवं नारी के उत्थान पर बोले। अन्त में आचार्य राजू वैज्ञानिक जी द्वारा धर्म एवं मजहब पर अति सारगर्भित उद्बोधन दिया। प्रधान जी ने उपस्थित समस्त आर्यजनों का धन्यवाद किया। - ***ऋषि राज वर्मा, मंत्री***

स्वास्थ्य रक्षा पपीता मात्र फल नहीं, औषधि भी है

गतांक से आगे -

पपीते से विटामिन ए व डी मिलते हैं जो आंखों तथा त्वचा के लिए अत्यंत लाभकारी हैं। हड्डियों को मजबूत करने वाला तथा कैल्शियम तथा रक्त को बढ़ाने वाला लोहा भी इस फल में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

पका पपीता विटामिन ए से भरपूर होता है एवं आंखों के लिए विटामिन ए बहुत ही आवश्यक है, **अत: रतौंधी, अंधापन एवं आंखों की कमजोरी में पपीते का प्रयोग आवश्यक है। विटामिन ए की कमी से कीटाणुओं का शरीर में शीघ्रता से संक्रमण हो जाता है साथ ही श्वास रोग, तपेदिक व निमोनिया भी हो सकते हैं। पपीता शरीर में विटामिन ए की कमी को पूरा करता है।**

पेट के रोगियों के लिए पपीता रामबाण औषधि है। पूरे मौसम में पेट के रोगियों को प्रात:काल पपीते का सेवन करना चाहिए। बाजार में पेट के रोग की जो भी दवाइयां मिलती हैं, उनमें अधिकांशत: पपीते का रस व दूध उपयोग होता है। यह एक सशक्त प्रोटीन पाचक है, **भोजन को पचाने की शक्ति पपीते में इतनी अधिक होती है, इसका अनुमान महज इसी बात से लगाया जा सकता है कि सब्जी या दाल बनाते समय इसमें कच्चे पपीते का टुकड़ा डाल दिया जाए तो वह कुछ ही समय में गल जाती है।** भोजन के उपरांत यदि थोड़ा-सा पपीता खा लिया लाए तो खाना शीघ्र ही पच जाता है।

बवासीर के रोगियों को सुबह खाली पेट पपीता खाने से अभूतपूर्व लाभ होता है। खाली पेट पपीता खाने से अजीर्ण और मंदाग्नि में शीघ्र लाभ होता है।

शरीर में खून की कमी से बच्चों को दूध पिलाने वाली महिलाओं में दूध की कमी हो जाती है, तो डाल का पका पपीता रोजाना खाली पेट 15-20 दिन खाने से लाभ होता है। इस प्रकार पपीते की सब्जी व रायता खाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं। पपीते का रस दाद, खाज, खुजली पर लगाने से आराम मिलता है। इस प्रकार हमें चाहिए कि गुणों से भरपूर इस फल का हम अधिक से अधिक उपयोग करें।

तीन दिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वैदिक सत्संग

यूपी के बुलंदशहर स्थित गांव ऐदलपुर में तीन दिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वैदिक सत्संग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यज्ञब्रह्मा आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने कार्यक्रम में यजुर्वेद के मंत्रों की व्याख्या करते हुए यज्ञ की महिमा बताई। भजनोपदेशक नरेश दत्त आर्य जी के भजन हुए। स्वामी प्रणवानंद जी सहित अनेक सन्यांसीवृंदों ने कार्यक्रम में पधार कर अपना आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम के रात्रिकालीन सत्र में वैदिक सत्संग की शोभा अद्भुत रही जिसमें बढ़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे। आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान गंगा प्रसाद निराला ने गांव में हुए भव्य कार्यक्रम की सफलता पर बधाई दी।क्षेत्र की लगभग 33 आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। वेद प्रचार कार्यक्रम के आयोजन में नीरज कुमारी एवं ओमपाल सिंह आर्य ने मुख्य भूमिका निभाई। गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय आर्य जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

ऑनलाइन मोक्षदा गायत्री यज्ञ का आयोजन

4 अक्टूबर को दिल्ली स्थित आर्य समाज अशोक विहार फेज-1 ने ऑनलाइन माध्यम द्वारा मोक्षदा गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। श्रद्धेय स्वामी शांतानंद जी और दर्शनाचार्या एवं कवयित्री विमलेश बंसल जी के सानिध्य में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पंडित सतीश चंद्र जी के ब्रह्मत्व में गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुआ। भारत के अनेक राज्यों सहित न्यूजीलैंड, यूएसए आदि से आर्यजनों ने कार्यक्रम से जुड़े। गायत्री से मोक्ष की ओर विषय पर स्वामी शान्तानन्द सरस्वती जी के प्रेरक प्रवचन एवं दर्शनाचार्या विमलेश बंसल जी के प्रेरक काव्य पाठ से आर्यजनों ने लाभ उठाया। कार्यक्रम में भजनोपदेशिका कविता आर्या के सुमधुर भजन की प्रस्तुति से आनंद उठाया। आर्य समाज के प्रधान प्रेम सचदेवा जी, मंत्री जीवन लाल जी और हरीश सचदेवा जी ने कार्यक्रम को सफलता पूर्वक संपन्न कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। - ***मन्त्री***

नि:शुल्क सत्यार्थ प्रकाश वितरण योजना

आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर करें गति प्रदान

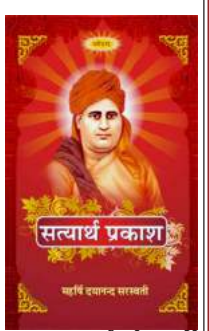

मानव समाज को सन्मार्ग दिखाने वाले महर्षि देव दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश उनकी विशेष रचनाओं में से एक प्रमुख रचना है। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर लाखों लोगों के जीवन प्रकाशित हुए हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प धारण किया हुआ है। इस लोकोपकारी कार्य के लिए सभा ने स्थाई निधि की योजना बनाई है। जिसके ब्याज से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश लगातार विश्व की संस्थाओं में भेजे जाते हैं। सभा के प्रयास और आप सबके सहयोग से सत्यार्थ प्रकाश भारत के समस्त महत्वपूर्ण संस्थानों में, पुस्तकालयों में तथा सभी दूतावासों में, स्कूल-कालेजों में लगातार पहुंचाए जा रहे हैं। इस महान कार्य में हमें निरंतर सफलता मिल रही है।

सभा का प्रयास है कि सत्यार्थ प्रकाश भारत के 135 करोड़ नागरिकों के हाथों में पहुंचे तथा विश्व के 700 करोड़ से ज्यादा लोगों के जीवन स्वामी दयानंद जी की इस अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश से प्रकाशित हों। आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर गति प्रदान करें।

- ★ इसके लिए आप अपने आर्यसमाज की ओर से या संस्था की ओर से अथवा अपने परिवार की ओर से, अपने बड़े-बुजुर्गों के जन्मदिवस/स्मृति में एक स्थाई निधि बनवाएं। जिससे लगातार यह सेवा कार्य चलता रहे।
- ★ अपने बच्चों के जन्मदिन पर, विवाह की वर्षगांठ पर स्वजनों को भेंट करें और सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में सहयोग करें।
- ★ इस महान परोपकारी सेवा में कुछ-न-कुछ आर्थिक सहयोग अवश्य दें।

अधिक जानकारी के लिए अथवा सहयोग हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Email : aryasabha@yahoo.com

लोक सम्पर्क कैसे बढ़ाएं?

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

लोक सम्पर्क करना एक कला है जो सीखने से आती है। जो इस कला में निपुण हैं उनका व्यवसाय बढ़ता चला जाता है। यदि नेता है तो जनता उसकी प्रशंसक बन जाती है। यदि ऐसा व्यक्ति उपदेशक है तो लोग उसे अपना गुरु मान लेते हैं। ऐसा व्यक्ति जिस भी क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ करता है उसकी प्रसिद्धि बढ़ती ही जाती है। आईये इस कला के प्रमुख सूत्रों पर विचार करें।

1. सर्व प्रथम यह विचार करना चाहिये कि आप किसलिये लोक सम्पर्क करना चाहते हैं। केवल मोबाईल पर मित्र बनाना गप-शप मारना और अपना तथा दूसरों का समय नष्ट करना अच्छा कार्य नहीं है।

2. यदि कोई जनहित का कार्य या जन जागरण का अभियान चलाया जाता है तो लोग स्वयं ही आपसे जुड़ते चले जायेंगे। आपकी यश कीर्ति सर्वत्र फैलती जायेगी। फिर भी आप बहुजन को अपने कार्यक्रम से परिचित कराना या उनका सहयोग लेना चाहते हैं तो आपको निम्न पहलुओं पर विचार करना होगा।

3. जनहित के अनेक कार्यक्रम या अभियान सरकार भी चलाती है। आप उस कार्यक्रम से जुड़कर अपने अनुभवों से जनता को लाभान्वित कर सकते हैं। परन्तु कई बार इन कार्यों का विरोध भी होता है। लोग आपको सरकारी पिट्ठू भी बतला सकते हैं। इसलिये ऐसे कार्यक्रम का चयन करें जिसमें राजनीति की गन्ध न आती हो। जैसे वृक्षारोपण, पर्यावरण सुरक्षा, सर्व शिक्षा अभियान आदि। इसका लाभ यह होगा कि आपका प्रशासनिक अधिकारियों से सीधा सम्बन्ध हो जायेगा।

4. कुछ सामाजिक संस्थायें भी जनहित की अनेक योजनाओं को चलाती है। आप अपनी रूचि के अनुसार ऐसी संस्थाओं के साथ मिलकर इन कार्यों में क्रियात्मक योगदान कर सकते हैं। यदि आपका कार्य प्रशंसनीय है तो आपको कोई बड़ा दायित्व भी मिल सकता है।

5. आपको यदि कोई वैचारिक अभियान चलाना है तो आप इण्टरनेट, मीडिया, समाचार पत्रों के माध्यम से इसे स्वयं ही संचालित कर सकते हैं। अपनी नवीन संस्था का कोई सुन्दर सा नाम रख कर उसके उद्देश्य तथा होने वाले लाभों का विवरण, संस्था का संविधान, कार्यकारिणी आदि बनाकर विधिवत् इसे चला सकते हैं। जैसे शारीरिक, मानसिक रोगों से बचने के उपाय, रोग सम्बन्धी पूरा विवरण, उसकी चिकित्सा आदि को इण्टरनेट के माध्यम से प्रसारित किया जा सकता है। ऐसे और भी जनहित के कार्य हैं जिनके विषय में लोगों की जिज्ञासा होती है। उनकी समझ में आने पर वे आपसे स्वयं ही जुड़ते चले जायेंगे।

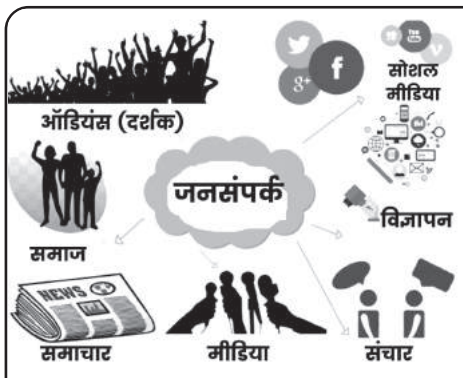

.....यदि कोई वैचारिक अभियान चलाना है तो आप इण्टरनेट, मीडिया, समाचार पत्रों के माध्यम से इसे स्वयं ही संचालित कर सकते हैं। अपनी नवीन संस्था का कोई सुन्दर सा नाम रख कर उसके उद्देश्य तथा होने वाले लाभों का विवरण, संस्था का संविधान, कार्यकारिणी आदि बनाकर विधिवत् इसे चला सकते हैं। जैसे शारीरिक, मानसिक रोगों से बचने के उपाय, रोग सम्बन्धी पूरा विवरण, उसकी चिकित्सा आदि को इण्टरनेट के माध्यम से प्रसारित किया जा सकता है। ऐसे और भी जनहित के कार्य हैं जिनके विषय में लोगों की जिज्ञासा होती है। उनकी समझ में आने पर वे आपसे स्वयं ही जुड़ते चले जायेंगे।.....

अनेक बार ऐसे अवसर भी आते हैं जब जनता की परेशानियों को दूर करने के लिये कोई सुदृढ़ विचारों वाला व्यक्ति आगे बढ़कर जनता का नेता बन, जनता का पथ-प्रदर्शन करता है और देखते ही देखते उसकी प्रसिद्धि हो जाती है। आपमें यदि साहस है तो आप ऐसे अभियान से जुड़ सकते हैं अथवा स्वयं नेतृत्व कर सकते हैं। ऐसे अवसर पर निम्न बातों का ध्यान रखें।

1. लोग उनकी बातों को सुनते हैं जो उनकी समस्याओं को सुलझाने के लिये संघर्ष करता है। यह तप साध्य कार्य है परन्तु अग्नि में तप कर ही तो सोना कुन्दन बनता है। यदि आप में कुछ करने की भावना है तो ऐसे जन-आन्दोलन में सक्रिय योगदान करें।

- शेष अगले अंक में

Makers of the Arya Samaj : Mahatma Hansraj

Continue From Last issue

Her health had been indifferent for sometime. But the trial of her son made her condition worse. At last the doctors gave up all hope of her life. On her deathbed she expressed a wish to see her son. Her husband was naturally very anxious to do what she asked. The magistrate was approached with an application for bail on behalf of Bal Raj. This was granted. When the happy news was brought to the dying mother she felt glad. But the police refused to accept the responsibility of taking Bal Raj to Lahore, and her hopes were dashed to the ground. She thus died with a broken heart, without seeing her son.

These two tragedies might have broken any man. But they did not ruffle L. Hans Raj. He went about his work as usual. He received visitors and attended to them as usual. He visited different Arya Samajees and lectured there as before. Even if anybody alluded to these subjects he kept quiet. At that time he showed the indifference to pain which the stoic used to have. It was no wonder that people began to call him a Mahatma. This title was quite justified. He seems to have a soul remarkable for its greatness and strength.

In 1918 Mahatma Hans Raj was asked to preside over the Punjab Educational Conference. This was but natural, for nobody in the province had served longer in the field of education than he. As president he delivered a very fine address which appealed to everybody. He said in the course of it, "Let there be no illiterate person in this province. Primary education should be made free and compulsory for all, for without it no nation can make progress in the world." He suggested that in every primary school students should be taught how to be good farmers and good citizens. He further added that the vernaculars should be made the medium of instruction. He also dealt with many other problems.

After his retirement from the Presidentship of the D.A.V. College Managing Committee, he was elected President ofthe Provincial Representative Assembly. This was the work which had always been very dear to his heart, for it meant that he would be responsible for spreading the message of the Vedas. But this was not a very easy thing to do.

On taking office he found that the funds of the Assembly were very scanty. The number ofthe preachers was also limited. The Arya Samajees in the mofussil were also indifferent. Some ofthem had not paid any money for the Assembly funds. Others had not held the anniversaries for a longtime. The first thing that he did was to collect funds for the Sabha. This he did by going about from one place to another. The next thing he did was to raise the number of the preachers. He then asked them to visit the Arya Samajees at different places. By going there they realized their duties.

To achieve all this he had to be in the office every day for three hours. He also went about from place to place delivering lectures. These lectures were always much appreciated. It is true that he is not a fiery orator like L. Lajpat Rai. But his speeches have a quiet charm of their own. He is always at his best when he is relating the history of the Arya Samaj. While doing so he often tells his hearers about the struggles, hardships and self-sacrifice oftheArya Samajists of days gone by. He is equaily good when he explains the lessons to be learnt from the study of the Ramayana and the Mahabharta. His lectures are also very effective when he explains the doctrines of the Arya Samaj. His great virtue as a speaker is that he makes clear everything he says.

He was still the President of this Assembly when famine broke out in Gharwal. This was due to the shortage of the rain. After a short time he received letters from Gharwal asking for help. So he issued an appeal for funds. The public had so much confidence in him that he collected a great deal of money for the purpose. He then sent a large number of volunteers there. They opened depots at many places, and grain was distributed to the people.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

.....To achieve all this he had to be in the office every day for three hours. He also went about from place to place delivering lectures. These lectures were always much appreciated. It is true that he is not a fiery orator like L. Lajpat Rai. But his speeches have a quiet charm of their own. He is always at his best when he is relating the history of the Arya Samaj. While doing so he often tells his hearers about the struggles, hardships and self-sacrifice ofthe Arya Samajists of days gone by. He is equaily good when he explains the lessons to be learnt from the study of the Ramayana and the Mahabharta. His lectures are also very effective when he explains the doctrines of the Arya Samaj. His great virtue as a speaker is that he makes clear everything he says.....

पृष्ठ 3 का शेष

इसके अलावा बॉर्डर से ही एक अन्य आतंकी अब्दुल गफ्फार के पास से 26 लाख 96 हजार जाली भारतीय रुपया बरामद हुआ लेकिन अगस्त 2020 में आतंकी अबू युसूफ उर्फ मुस्तकीम की गिरफ्तारी और सीमा के मदरसों में उसकी सक्रियता के बाद भारत–नेपाल सीमा पर स्थित ढाई सौ मदरसे खुफिया एजेंसियों के रडार पर आ गए।

अब मामले को आगे लेकर बढें तो अब साफ हो चुका था कि भारत नेपाल की खुली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर भारतीय जिलों में एकाएक मदरसों का खुलना, मस्जिदों मुसाफिरखानों का बनना, निश्चित ही किसी नई साजिश की ओर इशारा है। हाल ही में सुरक्षा एजेंसियों को आतंकियों के पास से कुछ महत्वपूर्ण सुराग हाथ लगे कि सऊदी अरब, तुर्की और कतर जैसे देशों से पैसा भेजा जा रहा है। सीमा से सटे गांव शहरों के मुसाफिर खानों और मस्जिदों के लिए भी दावत ए इस्लामिया नामक संगठन के जरिये फंडिंग हो रही है। इन इलाकों में तालीम नाम का एक एनजीओ सक्रिय है, जो मदरसों के लिए आर्थिक गतिविधियों का संचालन करने में लगा है। बहरहाल, भारत की सुरक्षा एजेंसियों ने भारत नेपाल सीमा पर अपने गुप्तचर तंत्र और सुरक्षाबलों को और चौकन्ना किया है। इस मसले पर उत्तर प्रदेश स्थित बस्ती के आईजी अनिल कुमार राय कहते हैं कि केंद्र से मिले इनपुट के बाद से जांच पड़ताल की जा रही है, साथ ही नेपाल से भी जानकारी साझा की गई है। इसका सबसे बड़ा सबूत ये है कि सीमा से सटे इन इलाकों में जहाँ आमतौर पर गरीबी है लेकिन इसके बावजूद भी सरकार की ओर से आर्थिक अनुदान न मिलने और छात्रों की संख्या भी बहुत कम होने के कारण भी आखिर इन मदरसों के आलीशान भवन बन कहाँ से रहे हैं?

असल में ये इस्लाम और वामपंथ का एक राजनितिक गठबंधन है जिससे ये लोग सत्ता पाना चाहते हैं इसके बाद अपनी विचारधारा लागू करते हैं इसे आप एक छोटे से उदहारण से जानिए नेपाल में राजनीतिक परिवर्तन होते ही सबसे पहले नेपाल को सेकुलर घोषित किया गया। पशुपतिनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी भट्ट को निकालने के लिए अभियान चलाया गया, संस्कृत की पढ़ाई पर नकेल कसी गई। संस्कृत विद्यालयों की परंपरागत मान्यता को समाप्त करने के षड्यंत्र रचे गए। पर, मदरसा और मस्जिद को नियंत्रित करने की कोशिश नहीं की गई। मदरसों को कहां से पैसा मिलता है? कौन इसमें सहयोग कर रहा है? आर्थिक सहयोग करने वाले लोग, मुस्लिम देश व संस्थाओं का असली मकसद क्या है? इनमें विदेशी मौलवियों की ही नियुक्ति क्यों की जाती है? एक भी सवाल और कार्यवाही इस पर नहीं की गयी। – *राजीव चौधरी*

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज यमुना विहार
दिल्ली-110053

प्रधान	: डॉ. सुबोध कुमार शर्मा
मंत्री	: श्री विश्वास वर्मा
कोषाध्यक्ष	: श्री देवेन्द्र कुमार गुप्ता

MDH **हवन सामग्री**
मात्र 90/- किलो
10, 20 किलो की पैकिंग
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

आर्य समाज ने बूंदी मेन बाजार में वितरित किए सत्यार्थ प्रकाश

संदेश न्यूज। कोटा. आर्य समाज कोटा एवं बून्दी के संयुक्त तत्वावधान में आमजन को वैदिक विचारधारा से परिचित कराने के अभियान के अन्तगर्त बून्दी में सत्यार्थ प्रकाश वितरित किए गए। राजस्थान आर्य समाज के प्रांतीय प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में आर्यसमाज कोटा के डीएवी धर्म शिक्षक पं. शोभाराम आर्य, महावीर नगर आर्य समाज के मंत्री राधावल्लभ राठौर तथा आर्यसमाज बूंदी के प्रधान श्रीराम एडवोकेट, एडवोकेट अभयदेव शर्मा, अनुराग शर्मा, पदमाकर पाठक ने बून्दी के मुख्य बाजार व मार्ग में आमजन को वैदिक सिद्धान्तों से परिचित कराने के लिए आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां आमजन को न्यूनतम लागत मूल्य पर उपलब्ध कराते हुए वितरित की गई।

इस अवसर पर प्रान्तीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि वेद भारतीय सनातन संस्कृति के मूल ग्रंथ है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वैदिक सिद्धांतों को आमजन की भाषा हिन्दी में सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से प्रस्तुत किया है। आर्य कार्यकर्ताओं ने माईक से आवाज लगाकर सत्यार्थप्रकाश बांटे। इस अवसर पर आर्य समाज के हेमालाल मेघवंशी, डॉ. हेमराज मंगल, राधेश्याम साहू आदि भी उपस्थित थे।

118 साल पुराना पुस्तकालय हुआ ऑनलाइन

संवाद न्यूज एजेंसी

हरिद्वार। गुरुकुल कांगड़ी सम विश्वविद्यालय के 118 साल पुराने पुस्तकालय को ऑनलाइन कर दिया गया है। गुरुकुल के इस पुस्तकालय में छह हजार रिसर्च जर्नल के साथ ही करीब 15 लाख पुस्तकों का संग्रह है। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय को ऑनलाइन करने से शोध व छात्रों को इसका बड़ा लाभ होगा।

गुरुकुल कांगड़ी सम विश्वविद्यालय के संस्थापक स्वामी श्रद्धानंद महाराज ने 1902 में कांगड़ी गांव गुरुकुल की

विवि के शोध छात्र-छात्राओं को मिलेगा पुस्तकालय का लाभ

स्थापना की थी। इस समय गुरुकुल एक पुस्तकालय भी स्थापित किया था। तभी से इस पुस्तकालय में लगातार दुर्लभ ग्रंथों, वेदों, पांडुलिपियों और छात्रों के पढ़ाने के लिए पुस्तकों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है। विश्वविद्यालय के कुल सचिव प्रोफेसर दिनेश भट्ट ने बताया कि विश्वविद्यालय के शोध छात्रों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की गाइडलाइन के अनुसार करीब छह हजार रिसर्च जनरल को ऑनलाइन कर दिया गया है। इसके साथ ही चारों वेदों के भाष्य तथा अन्य ग्रंथों को ऑनलाइन करने की प्रक्रिया जारी है। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में करीब 15 लाख पुस्तकों संग्रहित हैं। इन पुस्तकों को ऑनलाइन करने का कार्य भी किया जा रहा है। शुक्रवार को कुल सचिव प्रो. दिनेश भट्ट, पुस्तकालय इंचार्ज प्रो. श्रवण कुमार शर्मा, कार्यवाहक पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ. अनिल दीवान आदि की उपस्थिति में पुस्तकालय को ऑनलाइन कर दिया गया। अब छात्र एक कोड की मदद से विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से ऑनलाइन जुड़ सकेंगे।

"गुरुकुल कांगड़ी सम विश्वविद्यालय के पुस्तक में अति प्राचीन दुर्लभ पुस्तकों का भंडार है। इसके प्राचीन महत्व को देखते हुए इसे ऑनलाइन किए जाने का कार्य किया गया है। विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएं अब इसका पूरा लाभ ले सकेंगे।
– प्रो. रूप किशोर शास्त्री, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विवि

-: आर्यभजनोपदेशक सम्मेलन :-
एवं सम्मान समारोह

परिषद के संरक्षक डा. सोमदेव शास्त्री जी द्वारा १-२-३ जनवरी २०२१ को पदमिनी आर्ष कन्या गुरुकुल प्रतापनगर चित्तौड़ राजस्थान में निश्चित किया गया है। सभी सदस्य १ जनवरी को शाम तक पहुंचनें की कृपा करें।

सम्पर्क करें:- सोमदेव शास्त्री 9869668130
देवेन्द्र शेखावत 9414110646
सीमा श्री माली 9460617008
प्र. सहदेव बेधड़क 09837577423 म. कैलाश कर्मठ 09330545181 को. नरेशदत्त आर्य 7895313811

वैदिक साहित्य विक्रेताओं के लिए विशेष सूचना

ऐसे समस्त महानुभाव जो आर्यसमाज के विभिन्न कार्यक्रमों/वार्षिकोत्सवों में जा–जाकर साहित्य विक्रय का कार्य करते हैं तथा आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य साहित्य नहीं बेचते। अर्थात् जिनकी आजीविका कवेल आर्यसमाज के साहित्य को विभिन्न स्थानों पर होने वाले आयोजनों में जाकर बेचने पर ही निर्भर है, उनके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा विशेष व्यवस्थाएं बनाने का प्रयास कर रही है।

अत: ऐसे समस्त वैदिक साहित्य विक्रेताओं से निवेदन है कि वे योजना का लाभ उठाने के लिए अपना पंजीकरण कराएं। पंजीकरण कराने के लिए एक प्लेन कागज पर आवेदन पत्र के साथ अपना नाम, पता, मोबाईल नं. तथा इस कार्य में आने वाली समस्याओं और उन्हें दूर करने के उपाय/सुझाव लिखकर **"महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली– 110001"** के पते पर लिखकर भेजें। – *महामन्त्री*

वानप्रस्थी महानुभाव अपना विवरण भेजें

हमारे सभी आदरणीय आर्य समाजी महानुभावों के मन में वैदिक धर्म के अनुसार आश्रम व्यवस्था के प्रति अटूट निष्ठा प्रशंसनीय है। जीवन के तीसरे वानप्रस्थ आश्रम के लोग आर्य समाज की सेवा में तन–मन–धन से संलग्न हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उन समस्त महानुभावों से अनुरोध करती है जिन्होंने चाहे वानप्रस्थ दीक्षा ली हो या न भी ली हो किन्तु अगर उनके मन में आर्य समाज के प्रचार और सेवा कार्यों में रुचि है और वे महानुभाव महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के प्रचार–प्रसार को आगे बढ़कर गति प्रदान करने लिए संकल्पित हैं। कृपया वे सभी सज्जनवृन्द अपना नाम, फोन नं., पता, योग्यता और अनुभव लिखकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा– 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली– 110001'** के पते पर रजिस्र्ड डाक से भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल अथवा 9650183339 पर व्हाट्सएप्प करें। – *महामन्त्री*

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षो हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। – *सम्पादक*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 19 अक्तूबर, 2020 से रविवार 25 अक्तूबर, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 22-23/10/2020 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 21 अक्तूबर, 2020

आर्य संदेश टीवी चैनल

www.AryaSandeshTV.com

24 घंटे चलने वाला आपका अपना चैनल

प्रसारित होने वाले दैनिक कार्यक्रम

प्रात: 5:00 जागरण मन्त्र
प्रात: 5:05 शरण प्रभु की आओ रे
प्रात: 6:00 योग एवं स्वास्थ्य
प्रात: 6:30 संध्या
प्रात: 6:45 आओ ध्यान करें
प्रात: 7:00 दैनिक अग्निहोत्र
प्रात: 7:30 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (लाइव)
प्रात: 8:30 भजन बेला
प्रात: 9:00 श्री राम कथा
प्रात: 9:30 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव
प्रात: 10:00 प्रवचन संग्रह
प्रात: 10:30 नव तरंग
प्रात: 11:00 प्रवचन माला
प्रात: 11:30 योग एवं स्वास्थ्य
अपरान्ह 12:00 श्री राम कथा
अपरान्ह 12:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
अपरान्ह 1:00 विशेष
अपरान्ह 2:00 आर्य मंच
अपरान्ह 2:30 भजन सरिता
अपरान्ह 3:00 प्रवचन माला
अपरान्ह 3:30 नव तरंग
सायं 4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव
सायं 5:00 योग एवं स्वास्थ्य
सायं 5:30 शरण प्रभु की आओ रे
सायं 6:00 सायंकालीन अग्निहोत्र
सायं 6:30 संध्या
सायं 6:45 आओ ध्यान करें
सायं 7:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
सायं 7:30 श्री राम कथा
सायं 8:00 भजन सरिता
सायं 8:30 भजन बेला
रात्रि 9:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 10:00 शयन मन्त्र
रात्रि 10:05 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव
रात्रि 11:00 नव तरंग
रात्रि 11:30 प्रवचन माला
रात्रि 12:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
रात्रि 12:30 शरण प्रभु की आओ रे
रात्रि 1:00 विशेष
रात्रि 2:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 3:00 आर्य मंच
रात्रि 3:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
प्रात:4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव

नोट : आपातकालीन स्थिति में उपरोक्त दैनिक कार्यक्रमों में परिवर्तन किए जा सकते हैं। - ***व्यवस्थापक***

प्रतिष्ठा में,

युवा भजनोपदेशकों की सेवा का लाभ उठाएं

आप सबको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि अब दिल्ली में दो युवा भजनोपदेशक श्री सन्दीप भास्कर एवं श्री कुलदीप आर्य जी निवास कर रह हैं। दिल्ली एवं दिल्ली एन.सी.आर. की समस्त आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं, शिक्षण संस्थानों के माननीय अधिकारी महानुभावों से निवेदन है कि अपने प्रचार कार्यक्रमों - वार्षिकोत्सवों, वेद प्रचार सप्ताहों, भजन संध्या, देशक्ति गीत माला तथा अन्य उत्सवों/कार्यक्रमों में इन्हें आमन्त्रित करें और इनके ईश्वर भक्ति भजनों, महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज गुणगान, देश भक्ति गीतों, कवित्त एवं दोहों का आनन्द लें।

भजनोपदेशक महानुभावों को आमन्त्रित करने के लिए नीचे दिए गए उनके मोबाइल नं. पर अथवा 7428894029 से सम्पर्क करें -

श्री सन्दीप भास्कर जी
मो. 9311413918

श्री कुलदीप आर्य जी
मो. 9311414596

- महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

जानिये एम डी एच देगी मिर्च की शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता की

सच्चाई

यह मिर्च कर्नाटक में पैदा होती हैं। वहां पर लगभग 1000 औरतें पूरा दिन सिर्फ मिर्च की डंडी उतारने के काम में लगी रहती हैं। उसी मिर्च से देगी मिर्च तैयार होती है।

क्या आप लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला खाना चाहते हैं या बिना लकड़ी (डंडी) वाला मिर्च मसाला ?

लकड़ी (डंडी) बिना मिर्च मसाला शुद्धता और स्वाद के गुणों से भरपूर होता है। मसाला लगता भी कम है और स्वाद भी भरपूर आता है। क्योंकि बिना लकड़ी (डंडी) के मिर्च की शुद्धता 20% से भी ज्यादा और बढ़ जाती है। जबकि लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला लगता भी ज्यादा है और स्वाद भी नहीं आता है और तो और यह सेहत के लिये भी नुकसान दायक होता है।

आप खुद ही फैसला कीजिये कि आप कैसा मिर्च मसाला खाना पसंद करेंगे क्योंकि सवाल सिर्फ शुद्धता और स्वाद का ही नहीं आप की सेहत का भी है।

MDH मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच -सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली -110015 फोन नं० 011-41425106-07-08

E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

ESTD. 1919

आप भी बनें यज्ञमित्र

कम से कम 12
नए परिवारों में यज्ञ कराएं

दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र एन.सी.आर. में यज्ञमित्र बनने के लिए सम्पर्क करें-

श्री सतीश चड्डा जी
महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली
मो. 954004141, 9313013123

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह